BA Part I (H)
Paper I

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of sociology
VSJ college Rajnagar

सामाजिक स्तरीकरण के स्वरूप (Form of Social stratification) :-

बोटामोर ने मानव इतिहास में प्रचलित सामाजिक स्तरीकरण के प्रमुख चार स्वरूपों दास प्रथा, जागीर, जाति तथा वर्ग का उल्लेख किया है।

दास प्रथा :- दास प्रथा सामाजिक स्तरीकरण के चरम रूप का प्रतिनिधित्व करती है जिसमें व्यक्तियों के कुछ समूह पूर्ण रूप से अधिकारों से वंचित रहते हैं। विश्व में अनेक कालों एवं स्थानों पर दास प्रथा का प्रचलन रहा है। प्राचीन काल में यूनान तथा रोम तथा 18वीं एवं 19वीं सदी में दक्षिणी अमेरिका में इसका प्रमुख रूप से प्रचलन में रहा है।

एच. टी. हाबहाउस ने दास प्रथा को स्पष्ट करते हुए लिखा है, "एक व्यक्ति जिसे कानून और प्रथा दूसरे की सम्पत्ति मानते हैं। चरम अवस्थाओं में वह पूर्णतया अधिकारों से वंचित रहता है। तथा शुद्ध व्यक्तिगत सम्पत्ति की वस्तु है। इसकी स्थितियों में उसकी कुछ रक्षा की जा सकती है, लेकिन एक बैल अथवा गधे की तरह ही है।"

एच.जे. निवोर के अनुसार " प्रत्येक दास का एक स्वामी होता है, जिसके अधीन उसे रहना पड़ता है और यह अधीनता विशेष प्रकार की होती है। स्वामी को दास पर शक्ति प्रयोग करने की निर्बाध स्वतंत्रता होती है। दास स्वामी की सम्पत्ति होता है। दास को कोई राजनीतिक अधिकार नहीं होते। सामाजिक रूप से वह तिरस्कृत होता है। दास को अनिवार्य रूप से श्रम करना पड़ता है।

दास प्रथा औद्योगिक व्यवस्था के समान ही रही है। दास प्रथा के उदय के साथ-साथ कुलीनतंत्र का प्रकट होता है जो दास के श्रम पर जीता है।

जागीरें ⇒ जागीर प्रथा का प्रचलन मध्ययुगीन यूरोप में रहा जिसे प्रथा एवं कानून की मान्यता प्राप्त थी। जागीर प्रथा में तीन प्रमुख वर्ग थे - पादरी, सरदार एवं साधारणजन। प्रत्येक वर्ग की जीवन शैली एक दूसरे से भिन्न थी। सामाजिक स्तरीकरण में पादरी सर्वोच्च थे यहां तक राज्य भी चर्च के अधीन था। बोटोमोर ने जागीर प्रथा की कुछ विशेषताओं का उल्लेख किया है जो इस प्रकार है -

(1) प्रत्येक जागीर की एक वैधानिक परिभाषा थी, उनके अधिकार; कर्तव्य, विशेषाधिकार और दायित्वों के आधार पर समाज में इनकी एक निश्चित प्रस्थिति थी।

(2) जागीरों में स्पष्ट श्रम विभाजन पाया जाता था। जैसे - कुलीन वर्ग सबकी रक्षा करते, पुजारी सबके लिए -

प्रार्थना करते और जो साधारण सबके लिए भोजन का प्रबंध करते।

③ जागीर राजनीतिक समूह थी। उसके पास राजनीतिक शक्ति थी। भारत में भी जागीर की प्रथा रही है। जागीर प्रथा समाज में स्तरीकरण पैदा किया है।

जाति प्रथा (खण्ड स्तरीकरण) ⇒ सामाजिक स्तरीकरण में भारत की जाति प्रथा का भी योगदान रहा है। जाति एक ऐसा खण्ड समूह है जिसकी सदस्यता जन्म पर आधारित होती है। प्रत्येक जाति के लोगों का व्यवसाय एवं नाम निश्चित होता है। एक जाति के लोगों का व्यवसाय वंशागत होता है और एक जाति के सदस्य अपनी ही जाति में विवाह करते हैं। जाति की विशेषताएं इस प्रकार हैं —

1) जाति की सदस्यता जन्म पर आधारित होती है।
2) जाति समाज का खण्डात्मक विभाजन है।
3) जाति व्यवस्था में उच्चता एवं नीचता का क्रम पाया जाता है।
4) प्रत्येक जाति एक अन्तर्विवाही समूह है।
5) प्रत्येक जाति का एक वंशानुगत व्यवसाय होता है।
6) जाति के सदस्य खान-पान एवं सामाजिक सहवास, सम्बन्धी नियमों का पालन करते हैं।
7) प्रत्येक जाति का एक राजनीतिक स्वरूप होता है। इस रूप में जाति पंचायत जाति के नियमों का पालन कराती है

8) जाति की सदस्यता सम्पूर्ण जीवन के लिए होती है। कोई भी व्यक्ति प्रयत्न द्वारा जाति की सदस्यता बदल नहीं सकता।

उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर ही भारत में जातियों ने संस्तरण की व्यवस्था पैदा की है और प्रत्येक जाति के एक खण्ड का निर्माण करती है।

सामाजिक वर्ग (खुला स्तरीकरण) ⇒ सामाजिक वर्ग सामाजिक स्तरीकरण का एक प्रमुख स्वरूप है। विश्व के सभी समाजों में वर्ग व्यवस्था पायी जाती है। एक ही सामाजिक प्रस्थिति वाले व्यक्तियों के समूह को एक वर्ग कहा जाता है। वर्गों का आधार आर्थिक ही नहीं वरन् सामाजिक, सांस्कृतिक भी है। आगबर्न के अनुसार "एक सामाजिक वर्ग ऐसे व्यक्तियों का योग है जिनकी एक दिये हुए समाज में अनिवार्य रूप से समान सामाजिक स्थिति होती है।"

इस प्रकार समान सामाजिक प्रस्थितियों को धारण करने वाले व्यक्ति एक वर्ग का निर्माण करते हैं।

वर्तमान समाज में सामाजिक स्तरीकरण का मुख्य आधार की द्वारा ही स्पष्ट होता है। आधुनिक औद्योगिक समाजों में वर्ग ही सामाजिक स्तरीकरण का प्रमुख आधार है।